सम्भावनाओं के नए क्षितिज

इंटरनेट से

डॉ. दिनेश मणि

यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा कि सूचना आज के बदलते विश्व के परिप्रेक्ष्य में शक्ति का प्रतीक बन गई है। सूचना प्रौद्योगिकी का आविर्भाव औद्योगिक क्रांति के बाद सबसे बड़ी क्रांति के रूप में माना जाने लगा है। सूचना की आवश्यकता मनुष्य को सदा रहती है, चाहे उसका कार्य किसी भी क्षेत्र से सम्बंधित क्यों न हो। कुछ समय पूर्व तक उसे सूचना के आदान-प्रदान के लिए अथक परिश्रम करना पड़ता था। आज मल्टीमीडिया, सी.डी.रॉम तथा इंटरनेट जैसे उच्च टेक्नॉलॉजी के साधनों के चलते उपयुक्त सूचनाएं उचित समय तथा उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती हैं। मल्टीमीडिया की सहायता से कम्प्यूटर मेमोरी में एन्साइक्लोपीडिया तथा किसी देश के शहरों के टेलीफोन कोड, वहां के कार्यालयों, ऐतिहासिक एवं अन्य स्थानों के पते इत्यादि जैसे अनेक विषयों के संदर्भ डेटा बेस संग्रहित किए गए हैं।

आर्थिक क्षेत्र में अग्रणी होने के लिए प्रौद्योगिकी का अग्रणी होना जरूरी है। प्रौद्योगिकी की इस स्पर्धा को मात्र सुसज्जित प्रयोगशालाओं या विज्ञानकर्मियों के संख्या बल से नहीं जीता जा सकता। किन्तु इस सिमटती दुनिया में जहां भौगोलिक और राजनैतिक मानचित्रों का महत्व घटता जा रहा है और परस्पर सहयोग सबके हित में एक जरूरत बनता जा रहा है, बहुमूल्य सूचना का मात्र एक स्थान पर संग्रहित होकर रह जाना लाभप्रद नहीं कहा जा सकता। ऐसे में सूचना के इस खजाने को किसी शक्तिशाली आदान-प्रदान प्रणाली से जोड़ना आवश्यक था। आज इंटरनेट का उपयोग सूचना की आदान-प्रदान प्रणाली के रूप में बढ़ रहा है। इसके लिए राष्ट्रों की सीमाएं कोई मायने नहीं रखती हैं।

यह एक सुखद संयोग ही है कि जिस प्रणाली को तृतीय विश्वयुद्ध के दौरान सूचनाओं के अत्यंत गोपनीय आदान-प्रदान के लिए विकसित किया गया था, वही आज सूचना को सर्वव्यापक बनाने के काम आ रही है। 1969 में अमरीका के रक्षा विभाग ने इस प्रणाली का अर्पानेट नाम से विकास किया। इससे रक्षा विभाग की कुछ खास प्रयोगशालाएं ही जुड़ी रह सकती थीं। बाद में अन्य सूचना केन्द्रों को भी इससे जुड़ने दिया गया। इस नए और व्यापक रूप में इसका नाम हो गया-इंटरनेट। इसके बाद तो इसके प्रसार की गति कभी बाधित नहीं हुई। वैज्ञानिक, विद्यार्थी, उद्यमी सभी इससे जुड़ते गए। नवे दशक में इंटरनेट एक व्यावसायिक स्थल बन गया। आज

यह एक सुखद संयोग ही है कि जिस प्रणाली को तृतीय विश्वयुद्ध के दौरान सूचनाओं के अत्यंत गोपनीय आदान-प्रदान के लिए विकसित किया गया था, वही आज सूचना को सर्वव्यापक बनाने के काम आ रही है। 1969 में अमरीका के रक्षा विभाग ने इस प्रणाली का अर्पानेट नाम से विकास किया। इससे रक्षा विभाग की कुछ खास प्रयोगशालाएं ही जुड़ी रह सकती थीं। बाद में अन्य सूचना केन्द्रों को भी इससे जुड़ने दिया गया। इस नए और व्यापक रूप में इसका नाम हो गया-इंटरनेट।